

MA, Semester II

Paper 5, unit I

Topic - दीर्घकृत अवधान (Sustained attention)
 Nature and theory of sustained attention

किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण के दौरान दीर्घकृत अवधान (Sustained attention) एक महत्वपूर्ण घटना है, जो व्यावहारिक दृष्टि से काली महत्व रखता है। दीर्घकृत अवधान निगरानी (Vigilance) की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अधिक समय तक किसी घटना या परिस्थिति पर सतर्कतापूर्वक अपने ध्यान को केंद्रित रखता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एक विशेष परिस्थिति में दीर्घकृत अवधान का अध्ययन किया गया। उस समय रडार संचालकों (radar operators) में अवधान से संबंधित समस्या देखा गया। उस रडार के संचालकों को दुश्मन के हवाई जहाज से रडार में उत्पन्न संकेतों की पहचान करनी थी। कुछ समय तक इस प्रकार के निगरानी कार्य के पहचान संचालकों के काम-निष्पादन में गिरावट के लक्षण देखे गए। मैकवर्थ (Macworth, 1950) ने पहला प्रयोग किया जिसमें इन्हीं रडार के अनुरूप प्रदर्शन हेतु एक घड़ी का उपयोग किया। इसीलिए इसे घड़ी परीक्षण (clock test) कहा जाता है। रडार घड़ीनुमा उपकरण में कोई सांकेतिक चिन्ह नहीं था केवल काल रंग की सूई (black pointer) थी। यदि किसी गति या प्रयोज्य को सतर्कता के साथ निगरानी कार्य का निर्देश दिया जाता।

The first part of the document discusses the importance of...
 in the context of...
 The second part...
 The third part...
 The fourth part...
 The fifth part...
 The sixth part...
 The seventh part...
 The eighth part...
 The ninth part...
 The tenth part...
 The eleventh part...
 The twelfth part...
 The thirteenth part...
 The fourteenth part...
 The fifteenth part...
 The sixteenth part...
 The seventeenth part...
 The eighteenth part...
 The nineteenth part...
 The twentieth part...
 The twenty-first part...
 The twenty-second part...
 The twenty-third part...
 The twenty-fourth part...
 The twenty-fifth part...
 The twenty-sixth part...
 The twenty-seventh part...
 The twenty-eighth part...
 The twenty-ninth part...
 The thirtieth part...
 The thirty-first part...
 The thirty-second part...
 The thirty-third part...
 The thirty-fourth part...
 The thirty-fifth part...
 The thirty-sixth part...
 The thirty-seventh part...
 The thirty-eighth part...
 The thirty-ninth part...
 The fortieth part...
 The forty-first part...
 The forty-second part...
 The forty-third part...
 The forty-fourth part...
 The forty-fifth part...
 The forty-sixth part...
 The forty-seventh part...
 The forty-eighth part...
 The forty-ninth part...
 The fiftieth part...

इसके अलावे दीर्घकृत अवधान की एक व्याख्या करने
 के अनेक सिद्धान्त भी प्रतिपादित किए गए हैं
 जेरिसन एवं पिकेट (Jerison and Pickett, 1963)
 द्वारा प्रतिपादित प्रत्याशा सिद्धान्त (expectancy theory)
 प्रमुख है। इस सिद्धान्त के अनुसार जिन संकेतों
 पर दीर्घकृत अवधान देना होता है उससे संबंधित
 पूर्व से संबंधित सूचनाओं (Stored information)
 तथा उन अवस्थाओं जिनसे कोई संकेत उत्पन्न हो
 सकता है का पूर्वानुमान (Prediction)
 दीर्घकृत अवधान में अद्य भूमिका रखती है इस सिद्धान्त
 के अनुसार संकेतों का लघु पहचान करने की तत्परता
 और उक्त संकेत के उपस्थित होने की प्रत्याशा तथा के
 बीच धनात्मक सहसंबंध होता है। अतः कोई विवेचित
 संकेत (Predicted message) के सिद्धि समय विशेष में
 उपस्थिति की संभावित प्रत्याशा उक्त उत्तेजना का
 लघु पहचान करने की भाग्यिक तत्परता को बढ़ा देता
 है। जलज्वररूप संकेतों का पता लगाने का साधक
 बढ़ जाता है इस आधार पर दीर्घकृत अवधान की
 निपुणता उन्नत होती है।

Kumar Patel
 Maharaja College, Agra.